Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

चंद्रकांता के कथा–साहित्य में कश्मीरी समाज की स्थिति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ॰ मीनू देवी
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
हिंदी
विभाग,
हर्ष विद्या मंदिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार (उत्तराखंड़)

हिंदी लेखिका चंद्रकांता बहुआयामी साहित्य की धनी हैं, इनके कथा – साहित्य में दो सौ कहानियां, सात उपन्यास, आत्मकथात्मक संस्करण, एक कविता संग्रह और अनेक निबंध संकलित है। चंद्रकांता का जन्म कश्मीर की भूमि पर हुआ, जिसे कवि कल्हण ने कश्मीर का स्वर्ग कहा है। आधुनिक युग में यही कश्मीर आतंकवाद के कारण रक्त रंजित क्षेत्र बना हुआ है, कश्मीर घाटी में उपस्थित क्रौंच पक्षी अपनी चीखों के साथ चंद्रकांता की रचनाओं में मुखर हो चुका है। कश्मीर घाटी से कश्मीरी हिन्दू पंडितों को इस नारे 'पंडित! कश्मीर छोड़ो और पंडितानियों को छोड़ जाओ – के साथ कश्मीरी हिन्दू पंडितों को रातों–रात कश्मीर से खदेड़ दिया गया। हिन्दूओं का शोषण, दमन, उपेक्षा, अपमान, व्यंग्य वचन की ध्वनियों के साथ उन्हें भगोड़े शब्द से भी संबोधित किया। चंद्रकांता ने अपने उपन्यासों में कश्मीरी समाज, संस्कृति, इतिहास : एक विहंगावलोकन में इन्होंने कश्मीर की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पक्षों का सविस्तार वर्णन किया है। प्रसिद्ध लेखिका चंद्रकांता ने अपने तीन उपन्यास यहाँ वितस्ता बहती है तथा कथा सतीसर के साथ–साथ अपनी अनेक कहानियों में भी कश्मीर की परिस्थितियों पर विस्तार से वर्णन किया है।

कश्मीर को भारत देश का मुकुट कहा जाता है। यहां की आदित्य सुंदरता के कारण इसे धरती पर स्वर्ग के रूप में जाना जाता था। वर्तमान में कश्मीर की स्थिति ऐसी है कि यहां की धरती हिंसा और अलगाव का एक ऐसा ज्वालामुखी बन गया है कि संपूर्ण भारत देश इसमें झुलस रहा है। कश्मीर भारत की ईमानदारी, भारत की एकता अखंडता एवं सांप्रदायिक सौहार्द को परखने की एक कसौटी बन गया है। कश्मीर की स्थिति भारत के लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहेगी। वर्तमान में कश्मीर की समस्या का निवारण मोदी सरकार ने हल करने का प्रयास किया है परंतु आज भी वहां का वातावरण सौहार्दपूर्ण नहीं है। वर्तमान कश्मीरी हमले में 28 लोगों की निर्मम हत्या न केवल मानवीय संवेदनाओं को झकझोरती है, बल्कि यह आतंक और नफरत की राजनीति का ज्वलंत उदाहरण भी है। ये मासूम नागरिक, जो अपने जीवन की सामान्य दिनचर्या में लगे थे, हिंसा का निशाना बन गए, यह दर्शाता है कि आतंक की कोई जाति, धर्म या मानवता नहीं होती। ऐसे हमलों से समाज में भय, असुरक्षा और अस्थिरता फैलती है, जो लोकतंत्र और मानवाधिकारों के लिए गंभीर चुनौती है। इस प्रकार की घटनाएं हमें यह सोचने पर विवश करती हैं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। हर जान अमूल्य है, और उसका इस तरह समाप्त हो जाना केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है। आतंक के विरुद्ध एकजुटता, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था और संवेदनशील प्रशासनिक दृष्टिकोण ही इसका उत्तर हो सकता है। साथ ही, हमें यह भी समझना होगा कि शांति केवल कानून से नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, समरसता और आपसी संवाद से ही संभव है। यही समय है जब हम नफरत की दीवारों को गिराकर इंसानियत का पुल बनाएं।चंद्रकांता के कथा साहित्य में एक तरफ तो हिन्दू–मुस्लिम मिलजुलकर रहते थे, वहीं दूसरी ओर एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे, कश्मीर घाटी में हिन्दू– मुसलमान एक ही दस्तरखान पर साथ मिलकर भोजन करते देखे गए थे। चंद्रकांता का उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा' के अनवर मियां के शब्दों में ''वे लोग मानते हैं, प्यार से बुलाते हैं, बात करते हैं। चाय– पानी से धर्म का क्या ताल्लुक? मैं अपने घर में अपनी इबादत करता हूं, वह अपने घर में अपना पूजा–पाठ। घड़ी दो घड़ी मिल बैठकर हम अपना सुख– दुख बांट लेते हैं। यह हमें भी अच्छा लगता है, उन्हें भी, फिर पीढ़ियों से घरों में आना– जाना है। पंडित काफी इसरार करके चाय पिलाए तो भला इंकार क्यों करूं।''1

1947 से लेकर अब तक देश की स्थितियों का वर्णन चंद्रकांता के कथा साहित्य में मिलता है। लेखिका ने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं का चित्रण समाज के सभी वर्गों के पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिस समय देश में विभाजन से त्रस्त हुए विस्थापित कश्मीरियों की व्यथा का वर्णन लेखिका ने अपने उपन्यासों में लगभग एक जैसी स्थिति में किया है। 'यहां वितस्ता बहती है' उपन्यास के माध्यम से चंद्रकांता कहती है कि ''बंटवारे के तुरंत बाद कश्मीर पर कबाइली आक्रमण से काफी लोग बेघर हो गए। एक तरफ कबाइली बारामुला तक, दूसरी तरफ शालटेंग तक आ पहुंचे। ये तो वे बेवकूफ जर, जेवर और जोरू के चक्कर में मार खा गए, नहीं तो सीधे दनदनाते हुए राजधानी पर धावा बोल सकते थे। इतना अचानक हमला था वह प्रदेश के महाराजा ने प्रदेश का भारत से इलहाक करा दिया और स्वयं प्रदेश की सीमा से बाहर चले गए। यह तो शेरे– कश्मीर से अब्दुल्ला की सूझ–बूझ समझदारी व लोगों के प्रति वफादारी थी जो रातों–रात उन्होंने जनता का नेतृत्व किया और भारतीय सेना की सहायता कबाइलियों को मुजफ्फराबाद तक पीछे वापस धकेला गया।''2

चंद्रकांता का उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा है' में भी इसी प्रकार का वर्णन लेखिका के द्वारा किया गया है उपन्यास के पात्र दयाराम मास्टर जी वादी का इतिहास खोलकर दोहराते हैं। ''26 अक्टूबर 1947 का दिन था वो ''वह वक्त ही बड़ा खराब था, नहीं तो

महाराजा बहादुर, जिसने हमेशा अपनी प्रजा की सुख–सुविधा का ध्यान रखा प्रदेश छोड़कर रातों–रात भाग जाते?'' '' हां, जनता को बीच मझधार छोड़कर। ''बहुत अशुभ ग्रह थे प्रदेश के।'' संसारचंद ज्योतिष के आधार पर ग्रहों का प्रभाव समझाते और महाराजा की आन पर आंच ना आने देते। ''सुना होगा आपने भी की उन दिनों खीरभवानी में जलकुंड का रंग काला स्याह हो गया था। महाप्रलय का संकेत था वहां।'' ''महाप्रलय ही तो।''अर्जुननाथ जोड़ देते, ''देर ही क्या थी? कबाइली तो एक तरफ बारामूला तक पहुंचे थे, दूसरी तरफ शालटेंग तक खलिस शहर ही तो बचा था। ''ये तो वे हरामजादे जर–जोरू के चक्कर में मार खा गए। कुफ्र हो खुदा का उन दोजख के कीड़ों पर, सीधे शहर पर चढ़ आते तो, खुदा – न – खास्ता, आज हालात कुछ दूसरे ही होते'' अनवर मियां घाटी में बात करते हैं।''3 ये जो कबाइली आक्रमण हुए इन्हीं के कारण कश्मीरी लोगों के मन में भय की स्थिति पैदा हुई। इस आक्रमण के बाद सभी कश्मीरी अपनी सुरक्षा के लिए तरह–तरह के उपाय करने लगे थे। सभी लोगों ने आपस में मिलजुल कर मुहल्लों में कमेटियां बनायी। ये कमेटियां ऐसी थी जो अहिंसा और अमन चैन व आपसी भाईचारा कायम कर सकें। रातों में मोहल्लें के लड़के और अधेड़ पुरुष गस्त लगाकर लोगों का मनोबल बढ़ाते, हमलावर खबरदार, हम कश्मीरी हैं तैयार "इंकलाब जिंदाबाद वगैरह–वगैरह के नारे लगाए जाते, भय से आक्रांत लोगों में तसल्ली का एहसास होता।''4

कश्मीरी लोग कबायली आक्रमणकारियों से अत्यधिक पीड़ित थे, तब बारामुला, उड़ी और मुजफ्फराबाद आदि क्षेत्रों से विस्थापित हिन्दूओं को पुनः स्थापित करने के लिए तथा उनकी स्थिति में सुधार करने के लिए लोगों की उत्सुकता का वर्णन चंद्रकांता के उपन्यासों में मिलता है। ''झुंड के झुंड शरणार्थी भागकर शहर में बसने आए थे लुटे– पिटे, खाली हाथ, तन पर कुर्ते मात्र, नंगे पैर ,जो जिस हाल में था, जान बचाकर भाग आया था। उन शरणार्थियों को शहर में फिर से बसाने की समस्या पैदा हो गई थी। कबाइलियों द्वारा भगाई गई औरतों को फिर से अपने–अपने घरों में बहाल करने की समस्या ज्यादा विकट थी। इन 'लाजवंतियों' की समस्या आर्थिक से ज्यादा सामाजिक थी। यों तो सरकार ने सुरक्षा का प्रबंध कर कईयों को वापस अपने गांव घरों में बसाया था, पर जिसके घर जलाये गए, पूरे परिवार गोलियों से भून दिए गए, उन्हें शहरों में नए सिरे से शुरुआत करनी थी। ऐसा बेसहारा लोगों के लिए राजनाथ के कुछ दोस्तों के साथ मिलकर सुधार समिति का गठन किया।''5 वादी में आए दिन कबाईली हमले में परिवार के परिवार उजड़ रहे हैं। कबायलियों ने औरतों का हाल– बेहाल कर दिया। छोटे–छोटे बच्चों के साथ भी हिंसक व्यवहार करने से पीछे नहीं हटे। कुछ संपन्न परिवार के बचे व्यक्ति पूरी तरह से उजड़े परिवारों की सहायता में लगे हुए थे। लल्लेश्वरी जैसी स्त्रियां ऐसी असहाय स्त्रियों और आतंकवादियों के शिकार लोगों की सहायता करने के लिए पूरी तरह से तैयार रहती हैं। लल्ली ने बेटी का थरथराता आक्रोश सहलाया, '' उन लोगों के लिए हमसे जो भी बन पड़ेगा, जरूर करेंगे मुन्नी। तेरे दादाजी तो सुधार समिति वालों से इन्हीं कामों के लिए जुड़े हैं। गोपी कृष्ण जी, वकील साहब, रामजू, पंडित सुदर्शन लंगू और कितने–कितने इज्जतदार लोग घर–घर जाकर कपड़े–लत्ते रुपए –पैसा इकट्ठा कर रहे हैं। वह सब इन घर–बार से उजड़े शरणार्थियों के लिए ही तो। मन में इनकी बिगड़ी सवारने की चिंता न होती तो मुहरा के उजड़े गांव से निरंजन को क्यों ले आते? जहीन लड़का है,सोचकर उसे कॉलेज भेजने का संकल्प तो निभाया न उसने? एक तुलसी ही नहीं है मुन्नी, गांव के गांव उजड़ गए हैं, तू तो जानती है।''6 जिस कश्मीर में हिन्दू–मुसलमान मिलजुल कर रहते थे, भाई–भाई के बीच में दरारें पड़ने लगी हैं। आये दिन यहां मारकाट देखने को मिलती है। एक दूसरे के दुश्मन बन गए हैं। देश का राज्य कश्मीर एक समस्या का विषय है, आतंकवादी कश्मीर में हिन्दूओं के दुश्मन हो गए हैं। कश्मीर में आतंकवादी घर में घुसकर औरतों को बेइज्जत करके मार डालते हैं और किसी भी लड़की को अपने साथ में लेजाकर रखते हैं। चंद्रकांता के उपन्यास 'कथा सतीसर' की पात्र तुलसी भी इन्हीं बुरी परिस्थितियों से गुजर रही है ''कुछ नहीं बचा काव्या। मेरे सामने उसके बाबा – भाइयों को काट डाला। मुझे बचाते हुए अपनी जान दे दी उसने। उसकी खुली आंखों में कितनी पीड़ा।''7

ऐलान गली जिंदा उपन्यास में ऐसे ही दृश्य देखने को मिलते हैं उपन्यास का पात्र काका निः श्वास भरकर बोला ''तुम एक सोमें की बात कर रहे हो। उन आतंकियों ने तो पूरे के पूरे परिवारों को पंक्तियों में खड़ा करके भून दिया और मां–बहनों के साथ जो हुआ वह भगवान सात जन्मों में भी न दिखाएं।''8 आतंकवादियों की भूख का शिकार कश्मीर में हिन्दू ही नहीं हुए बल्कि कश्मीरी मुसलमानों को भी यह दर्द झेलना पड़ा। आतंकवाद ने कश्मीर घाटी को स्वर्ग से नरक में तब्दील कर दिया। यहां के लोगों ने उनके घर, जमीन सब छीन कर आतंकियों ने उन्हें तबाह कर दिया। घर से बेघर हुए विस्थापित कश्मीरी शरणार्थियों की तरह जीवन व्यतीत करने लगे। शिविरों में जीवन यापन करते हुए अपने घर वापसी का सपना कश्मीरी लोग कभी नहीं छोड़ पाए। जिस वादी में हिन्दूओं – मुसलमान पानी में नमक की तरह घुल मिलकर रहते थे। अब वर्तमान में एक–दूसरे के विरोधी हो गए और उपन्यास के अंत में हिन्दू –मुसलमान का भेद भी मिट गया। मंदिरों के साथ–साथ मस्जिदों पर भी वज्रपात हुआ। इन वहशी दरिंदों ने किसी को नहीं छोड़ा, चंद्रकांता ने 'कथा सतीसर' उपन्यास में बढ़ते आतंक पर शिकंजे और अमानवीयता को उजागर किया है। 'कथा सतीसर' उपन्यास में रहमत तांगेवाला अपनी मां को हिन्दू – मुस्लिम संघर्ष की चेतावनी देता है, इस संघर्ष के विषय में उसकी मां उसे समझती है, ''अरे मुए, यह भेदभाव बाहर वालों की फितरत है। अपने मुलुक में यह फर्क नहीं चलेगा। दूध – शक्कर की तरह मिल –बटा – मुसलमान को कोई जुदा कैसे करेगा? बोल ? मैं तेरी अम्मा अशी दाई का काम करके चार पैसे कमाती हूं। हिन्दू जनानी, मुसलमान जनानी में फर्क करूंगी? बटनी बुलाए तो मना करुंगी? अगर करुं भी तो खाऊंगी क्या और टब्बर को खिलाऊंगी

क्या? तेरा बाप बैठा है खिलाने को?....बटा – मुसलमान। अब जेबा कुंजडन साग बेचते बटा मुसलमान देखेगी? ग्वाल गफूर हिन्दू घरों में दूध नहीं देगा? दर्जी उसके कपड़े नहीं सिएगा? हां! हांजी नदी पार नहीं उतरेगा? बोल?''9

लेखिका ने अपने उपन्यास में मनुष्य द्वारा की गई ईश्वरोंपासना का वर्णन किया है इस उपन्यास में वह लिखती हैं, कि महदजू अमरनाथ यात्रा के अनुभव बताता है कि इस यात्रा करते समय, सामान, गठरी – मठरी पीठ पर लादकर जाना पड़ता है। जो लोग पहाड़ से नहीं होते, मैदान से आए होते हैं, वह मुश्किल से हांफते– कांपते चढ़ पाते हैं, मैदानी व्यक्तियों से सामान नहीं उठाया जाता है। जब सावन का महीना आता है तो अमरनाथ की यात्रा में सावन पूर्णिमा के समय चंदनवाड़ी स्थान पर महीनों मेला लगता है। जो लोग छड़ी के साथ आते हैं उनका छड़ी मुबारक के साथ रात भर यही पड़ाव रहता है। शारिका, प्रेम, कत्यायनी इन छोटे बच्चों को चंदनवाड़ी से आगे जाने नहीं दिया जाता है। अमरनाथ की यात्रा के संबंध में महदजू कहता है कि ''आज भी श्रावण पूनम को अमरनाथ यात्रा होती है। देश– परदेश से यात्री शिवजी के दर्शन करने के लिए आते हैं, भेंट चढ़ावे – चढ़ाते हैं और उसे चढ़ावे का एक हिस्सा मलिक परिवार के लिए अलग रखा जाता है।''10 प्रत्येक मनुष्य विधिपूर्वक वह जो आश्चर्यजनक एवं गूढ़ है जिसका कोई आकार नहीं है उसकी पूजा अर्चना करता है। मनुष्य के मन में गूढ़ रहस्य कायम होने के कारण वह देवी – देवताओं से संबंधित रहस्यों से प्रसन्न होकर पूजा पाठ करता है। इस संसार रूपी भंवर में ऐसा माना जाता है की पूजा – पाठ करने से ईश्वर की कृपा दृष्टि मनुष्य पर बनी रहती है और वह विपत्ति से दूर रहता है। यह सभी लोगों की धारणा बनी हुई है, इसी के परिणाम स्वरुप पूजा – पाठ मनुष्य के धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। चंद्रकांता के उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा है' कि नायिका अरुंधती ईश्वर की पूजा पाठ में बहुत ही ज्यादा विश्वास करती है। खिचड़ी अमावस की रात को वह मछली, मीट, अचार की फांक से खिचड़ी सजाकर घास की पत्तलों पर गृहदेवता के लिए परोसती है। उसका यह मानना है कि ''इस रात यक्षराज या गृहदेवता सभी घरों के चक्कर लगाते हैं, जिस घर में सूच्ची खिचड़ी पाते हैं, उसे घर वालों से खुश होकर भी प्रसाद पाते हैं और बदले में लक्ष्मी को भेज देते हैं।''11

'यहां विस्तता बहती है' उपन्यास में उपन्यास का नायक श्यामभाई आस्तिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। वह ठाकुरद्वारे में नियमित घंटा– डेढ़ घंटा पूजा करता है। पूजा के समय वह आदि देव गणेश की स्तुति से आरंभ कर शिव – पार्वती, विष्णु आदि देवताओं की पूजा करता है। नन्हे कृष्ण, शिवलिंग, गणेश कुमार आदि ठाकुरों का दूध – दही से स्नान– पूजन कर परम श्रद्धा के साथ थाल बजाता है। इसके बाद वह सप्तलोक और भागवत गीता पढ़ता है। पूजा करते समय वह '' वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूरमर्दनम्..... और मुकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम् , यत्कृपा तमहं वंदे परमानंद माध्वम् ' श्लोक कई बार उच्चारते।''12 इसी उपन्यास के रचनात भाई भी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। वह सुबह नहा धोकर दस मिनट प्राणायाम की मुद्रा में ध्यान कर 'शरण भगवान् 'कहकर ठाकुरद्वारे में माथा टेककर अपने काम में जुट जाते हैं। हिन्दू जाति के लोग फाल्गुन मास में शिवरात्रि का त्योहार 15 दिन तक बड़ीधूमधाम से मानाते हैं। इसी समय मुसलमान लोग अपनी ईद मनाते हैं। हिन्दू – मुस्लिम समाज का इन दोनों उत्सवों के कारण मेल मिलाप बढ़ता है, दोनों ही जातियों के लोग एक दूसरे के घर मुबारक बात बोलने आते हैं। हर दिन नई समस्याएं झगड़ा सुनकर मास्टर जी उम्मीद छोड़कर अकेले बैठ जाते हैं, तो अनवर मियां आकर उनसे कहते हैं कि ''हमने तो ताउम्र अपना भाईचारा निभाया अभी भी शिवरात्रि, ईद पर बधाइयां देने और गले मिले बिना चैन नहीं पड़ता। लिहाज, शर्म और दोस्ती पर जान कुर्बान करने को अभी भी तैयार बैठे हैं। हम भला क्यों हिम्मत हारे।''13

कश्मीरी समाज में पहले इतना भेदभाव नहीं था और न ही इतनी भेद –भाव की स्थितियां थी। पहले यह दोनों धर्म एक दूसरे से ग्रहण करते थे परंतु बाद में यह दो वर्गों में बांट दिए गए। कार्तिक व कात्यायनी के संवादों में कश्मीर में सांप्रदायिकता सद्भाव के अतीत की झलक देखने को मिलती थी। '' इसके कारण भी है कात्या! नूरुद्दीन के पूर्वज किश्तवाड़ के हिन्दू राजवंश से जुड़े थे। किसी अशांत समय में 1320 ई0 के आसपास दो भाई वहां से भाग कर कश्मीर में बस गए। इसी शेख सालार और अपनी पत्नी सदरमाजि से 1373 ई0 में नूरुद्दीन का जन्म हुआ। धर्म जाति का भेद तो उनके जीवन में ही मिट गया था। विचारों में कैसे रहता।''14 चंद्रकांता के उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा है' में हिन्दू – मुस्लिम एकता की मिसाल देखने को मिलती है। उपन्यास में संसार चंद का कथन है कि '' हां भाई, जहां हिन्दू – मुसलमान पानी में नमक की तरह घुल मिलकर रहते हों, वहां भेदभाव की कॉन्फ्रेंस कहां टिकने वाली थी? देखा तो था क्या हुआ, इधर मुस्लिम कांफ्रेंस के सिलसिले में भाषणबाजी हुई उधर शुपैयां में सीताराम पटवारी को बदमाशों ने काट डाला।''15 लेखिका ने इस उपन्यास में हिन्दू – मुस्लिम एकता का एक ओर उदाहरण इस प्रकार चित्रित किया है कि '' ब्राह्मण–वर्ग ही नहीं अनवर मियां, मौलवी साहब, गुलाम नबी आदि भी सदियों से चले आते विश्वासों में दरार बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। हिन्दू – मुसलमान दोनों की दृष्टि में जो एकरूपता थी। उसका कारण मास्टर जी वादी के इतिहास में खोजते हैं। वह कहते हैं, ''चौदहवीं शती से पहले तो वादी में हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म व शैवमत प्रचलित थे। इस्लाम के आगमन पर हिन्दूओं का मत – परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाया गया। दोनों में कोई मूल भेद नहीं है, तभी तो खान – पान, रहन –सहन लगभग एक जैसा है और कहीं–कहीं तो दोनों ईश्वर – आराधना भी एक ही जगह करते हैं, शाहे – हमदान और काली देवी का मंदिर क्या एक ही जगह पर स्थित नहीं है।''16 इस उपन्यास में हिन्दू और मुस्लिम धर्मियों में परस्पर आत्मीयता देखने को मिलती है। कश्मीरी लोग कश्मीरी संप्रदाय और कश्मीरियत धर्म से परस्पर जुड़े हुए दिखाई देते हैं। कश्मीर के विषय में कहा जाता है कि

उस समय पंडितों के कुल ग्यारह घर बचे थे। जिन्हें सुल्तान जैलुलाबद्दीन ने फिर से कश्मीर में बसाया और इसके बाद पंडितों की खोई हुई प्रतिष्ठा को उन्होंने लौटा दिया। इस घटना के बाद सुल्तान 'बादशाह' कहलाया। आधुनिक युग में भी कश्मीरी उन्हीं गर्दिशों के दौर से गुजर रहे हैं। इस इंतजार में की 'बादशाह' आकर उनकी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस दिलाएगा। आज भी कश्मीर में से विस्थापित पंडित जो देश के अन्य भागों में अपने देश में शरणार्थियों का सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से गुजरना पड़ रहा है। यह विश्वास करने योग्य बात नहीं है कि यह है वह कश्मीर है जो ''जहां मैं महजूर कहा था, कि हिन्दू दूध है और मुसलमान शक्कर। लाली वाख गाती है – कि

''शेव छुय थलि थलि रोजाना
मोजान ब्योन हयोंद त मुसलमान।''17

इसका तात्पर्य है ,कि शिव सर्वत्र व्याप्त हैं, इसलिए हिन्दू और मुसलमान को भिन्न मत समझना। अपने कथा साहित्य के माध्यम के द्वारा लेखिका चंद्रकांता ने सभी समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर खड़ा करके, मानव जीवन की विभिन्न वृत्तियों को आधुनिक संदर्भ में देखने की चेष्टा करते दिखाई देती है। चंद्रकांता का कथा साहित्य कश्मीरी समाज की पीड़ा, विस्थापन, संघर्ष और सांस्कृतिक विघटन का ऐसा दस्तावेज है जो केवल अतीत को नहीं टटोलता, बल्कि वर्तमान की जटिलताओं और सामाजिक संकट को भी उजागर करता है। उनके उपन्यास और कहानियाँ कश्मीर की भौगोलिक सुंदरता से अधिक वहां के टूटते–बिखरते मानवीय संबंधों की सच्चाई को सामने लाते हैं। यह साहित्य हमें बताता है कि कश्मीर केवल एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि वहां का हर व्यक्ति एक जीवित अनुभव है, जो अपने अस्तित्व, स्मृति और पहचान के लिए संघर्ष कर रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब कश्मीर फिर से वैश्विक और राष्ट्रीय विमर्शों का केंद्र बन चुका है, तब चंद्रकांता का साहित्य और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। कश्मीरी पंडितों के पलायन को केवल राजनीतिक घटना नहीं माना, बल्कि उन्होंने इसे सांस्कृतिक विस्थापन की त्रासदी के रूप में चित्रित किया। एक समृद्ध संस्कृति, जो सह–अस्तित्व और सौहार्द पर आधारित थी, विघटन की शिकार हो गई। विस्थापन केवल भूमि से नहीं, बल्कि स्मृतियों, भाषाओं, परंपराओं और रिश्तों से भी होता है। उपन्यास का पात्र जब घर से बाहर होता है तो वह केवल एक नागरिक नहीं, एक समूची संस्कृति का प्रतिनिधि बन जाता है जो अपनी जड़ों की तलाश में भटकता रहता है। कश्मीरी समाज की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए उनके साहित्य में बार–बार आने वाले भावों को देखना होगा। असुरक्षा, अस्मिता का संकट, भय, टूटते पारिवारिक और सामाजिक संबंध, और राजनीतिक अनिश्चितता। चंद्रकांता ने यह दर्शाया कि कश्मीर में रहने वाला हर वर्ग, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, इस त्रासदी से किसी न किसी रूप में प्रभावित हुआ है। आतंकवाद के कारण जहाँ एक ओर हिन्दू समुदाय विस्थापित हुआ, वहीं मुस्लिम समुदाय भी अपने ही घर में संदेह, नियंत्रण और असहजता का शिकार हुआ। उन्होंने इन दोनों पक्षों के अनुभवों को निष्पक्ष दृष्टि से चित्रित किया है, जिससे पाठक एकतरफा सोच से बाहर आकर मानवीय दृष्टिकोण अपना सकें। आज के परिप्रेक्ष्य में जब कश्मीर को मुख्यधारा में लाने की राजनीतिक कोशिशें हो रही हैं, तब चंद्रकांता का साहित्य यह याद दिलाता है कि पुनर्संरचना केवल विकास योजनाओं या कानूनी बदलावों से नहीं होगी, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्स्थापन से ही संभव होगी। उनका साहित्य इस बात पर बल देता है कि जब तक विस्थापित व्यक्ति को न केवल जमीन बल्कि सम्मान, स्मृति और पहचान की पुनरावृत्ति नहीं मिलती, तब तक समाधान अधूरा रहेगा। वर्तमान सरकार की नीतियाँ चाहे जैसे भी हों, चंद्रकांता यह मानती हैं कि कश्मीर की आत्मा उसके लोगों में बसती है, और जब तक उनके घाव नहीं भरते, तब तक कोई भी विकास अधूरा है। एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि चंद्रकांता ने अपने लेखन में स्त्री दृष्टिकोण को अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है। कश्मीरी समाज में स्त्रियाँ किस प्रकार दोहरी पीड़ा की शिकार हुईं, एक ओर आतंकवाद और विस्थापन का संकट, दूसरी ओर पितृसत्तात्मक समाज की सीमाएँ। इसका चित्रण उनके उपन्यासों में बार–बार आता है। इन स्त्रियों की चुप्पी भी एक मुखर संवाद बन जाती है। वर्तमान में जब महिलाएँ सामाजिक नेतृत्व में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं, तब चंद्रकांता का स्त्री–पक्ष कश्मीरी समाज के भीतर से उठती आत्मबल की आवाज के रूप में दिखाई देता है। आज जब कश्मीरी युवा अपनी पहचान को लेकर द्वंद्व में हैं, कि वे भारतीय हैं, कश्मीरी हैं, या दोनों, तब चंद्रकांता का साहित्य यह समझाने का प्रयास करता है कि साहित्य को संघर्ष की अभिव्यक्ति से आगे ले जाकर उसे संवाद का माध्यम बनाया है। वर्तमान समय में जब सोशल मीडिया और राजनीतिक भाषणों में संवाद की जगह आरोप–प्रत्यारोप और ध्रुवीकरण ने ले ली है, तब उनका साहित्य एक गहरे मानवीय संवाद की मांग करता है। चंद्रकांता की भाषा, शैली और पात्रों की प्रस्तुति भी वर्तमान कश्मीरी समाज को समझने में सहायक होती है। वे शिल्प से अधिक संवेदना को महत्व देती हैं। उनके पात्र जटिल नहीं, बल्कि जीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य केवल कश्मीरी पाठकों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यापक भारतीय समाज में कश्मीर को समझने का एक सेतु बनता है। वर्तमान कश्मीर में बढ़ती राजनीतिक सक्रियता, परिसीमन, अनुच्छेद 370 का निरसन, और अलगाववादी भावनाओं के साथ विकास की नई घोषणाएँ, यह सब मिलकर एक ऐसे कश्मीरी समाज को गढ़ रहे हैं जो असमंजस में है। ऐसे में चंद्रकांता का साहित्य एक वैचारिक आलोक की तरह सामने आता है, जो कहता है कि समाधान केवल नीति से नहीं, बल्कि संवेदना से संभव है। वे न तो किसी सरकार की प्रवक्ता बनती हैं, न ही किसी विचारधारा की समर्थकय उनका एकमात्र पक्ष मानवीयता है। उनकी रचनाओं का एक विशेष पक्ष यह भी है कि वे कश्मीरी समाज में स्त्रियों की स्थिति को बहुत गहराई से प्रस्तुत करती हैं। चंद्रकांता के पात्र संघर्षशील, आत्मनिर्भर और जिजीविषा से परिपूर्ण होते हैं।

वे केवल पीड़ित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा रखने वाले जीवंत चरित्र हैं। इस प्रकार, चंद्रकांता का स्त्री दृष्टिकोण केवल नारी विमर्श तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समाज की व्यापक विसंगतियों और दबावों को उजागर करने का माध्यम बन जाता है। चंद्रकांता के लेखन की भाषा सरल, प्रवाहमयी और संवेदनशील है। उनकी शैली पाठक को भीतर तक झकझोरती है और उन्हें उनके समाज, संस्कृति तथा राजनीति से जुड़ने पर विवश करती है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीक और बिंब कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत से गहराई से जुड़े हुए हैं, जिससे पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद मिलता है, बल्कि वे एक पूरे समाज के दर्द और संघर्ष से भी परिचित होते हैं। राजनीतिक दृष्टि से देखें तो चंद्रकांता का साहित्य किसी राजनीतिक विचारधारा का प्रचार नहीं करता, बल्कि वह मानवीय दृष्टिकोण से घटनाओं का मूल्यांकन करता है। उनका लेखन यह स्पष्ट करता है कि किसी भी सामाजिक समस्या को केवल धर्म या जाति के आधार पर नहीं देखा जा सकता, बल्कि उसके पीछे की ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को समझना जरूरी है। इस संदर्भ में उनका साहित्य संवेदना, समझ और सह–अस्तित्व की चेतना को सशक्त रूप में प्रस्तुत करता है।

निष्कर्षतः, चंद्रकांता का कथा साहित्य कश्मीरी समाज की वर्तमान स्थिति को गहराई से समझने का माध्यम बनता है। यह साहित्य न केवल विस्थापन की पीड़ा को शब्द देता है, बल्कि पुनर्निर्माण की संभावना को भी दिखाता है। वर्तमान में जब कश्मीर राजनीतिक विमर्श का विषय बना हुआ है, तब चंद्रकांता की कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि किसी भी समाज को केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और मानवीय परतों के माध्यम से समझा जाना चाहिए। वे हमें यह भी याद दिलाती हैं कि कोई भी समाज जब तक अपनी जड़ों से जुड़ा नहीं होता, तब तक उसकी उन्नति अधूरी रहती है। चंद्रकांता का साहित्य इस अधूरेपन को पहचानता है और उसे पूरा करने का आग्रह करता है संवेदना, स्मृति और संवाद के रास्ते। चंद्रकांता के कथा साहित्य में कश्मीरी समाज का चित्रण संवेदना, स्मृति और यथार्थ के मेल से हुआ है। उन्होंने यह दिखाया कि कश्मीर केवल एक भू–राजनीतिक मुद्दा नहीं, बल्कि टूटते रिश्तों, विस्थापित जीवन और सांस्कृतिक विघटन की पीड़ा का प्रतीक है। उनके पात्र वर्तमान समय की असुरक्षा, भय और पहचान के संकट को झेलते हुए भी आशा का मार्ग खोजते हैं। आज जब कश्मीरी समाज पुनर्निर्माण के द्वार पर खड़ा है, तब चंद्रकांता का लेखन यह समझने में मदद करता है कि स्थायी समाधान केवल संवाद, संवेदना और स्मृति से ही संभव है।

चंद्रकांता के कथा साहित्य में कश्मीरी समाज की जटिलता, पीड़ा और पहचान का संघर्ष स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाया है कि कैसे कश्मीर का समाज राजनीतिक उथल–पुथल, आतंकवाद और सांस्कृतिक टूटन से प्रभावित हुआ है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका लेखन विस्थापितों की वेदना, स्मृति और अस्मिता की खोज को उजागर करता है। उनके साहित्य में न केवल अतीत की त्रासदी है, बल्कि भविष्य की आशा भी है। यह साहित्य आज के कश्मीर को एक मानवीय दृष्टिकोण से समझने का संवेदनशील और प्रामाणिक माध्यम बनता है। चंद्रकांता का कथा साहित्य न केवल कश्मीरी समाज की वास्तविकता को स्वर देता है, बल्कि वह पूरे भारतीय समाज की अंतर्धाराओं, विस्थापन, पहचान, अस्मिता, और स्त्री–अस्तित्व जैसे प्रश्नों को भी उद्भाषित करता है। उनका लेखन एक ऐसा दर्पण है जिसमें समाज की गहराइयों को देखा और समझा जा सकता है। वह एक ऐसी साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज को जागरूकता, संवेदना और आत्मनिरीक्षण की दिशा भी दी है। चंद्रकांता के कथा साहित्य में कश्मीरी समाज की स्थिति विस्थापन, सांस्कृतिक विघटन और अस्मिता संकट के रूप में उभरती है। उन्होंने कश्मीरी पंडितों के पलायन, मुस्लिम समाज की असुरक्षा और स्त्रियों की पीड़ा को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया है। वर्तमान में जब कश्मीर सामाजिक–पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में है, उनका साहित्य यह स्पष्ट करता है कि समाधान केवल राजनीतिक नहीं, सांस्कृतिक और मानवीय स्तर पर भी आवश्यक है। वे कश्मीर की पीड़ा को साझा करने और संवाद के माध्यम से पुनर्संयोजन की संभावना प्रस्तुत करती हैं, जो आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1984)पृष्ठ संख्या–50–51
2. यह वितस्ता बहती है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1992) पृष्ठ संख्या–63–64
3. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2,(1984) पृष्ठ संख्या–43
4. यह वितस्ता बहती है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1992) पृष्ठ संख्या–63
5. वही, पृष्ठ संख्या–64–65
6. कथा सतीसर, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(2016) पृष्ठ संख्या–214
7. वही, पृष्ठ संख्या–214
8. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2,(1984) पृष्ठ संख्या–44
9. कथा सतीसर, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(2016) पृष्ठ संख्या– 151
10. वही, पृष्ठ संख्या– 84
11. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1984)पृष्ठ संख्या–15
12. यह वितस्ता बहती है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1992) पृष्ठ संख्या–15
13. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(1984)पृष्ठ संख्या–47
14. कथा सतीसर, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(2016) पृष्ठ संख्या– 325
15. ऐलान गली जिंदा है, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2,(1984) पृष्ठ संख्या–45
16. वही, पृष्ठ संख्या– 114
17.. कथा सतीसर, चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2(2016) पृष्ठ संख्या– 530